हम न भूलेंगे वह शाम

मेजर जनरल नीलेन्द्र कुमार

श्रीमती प्रमिला चतुर्वेदी ;पत्नी स्व0 इंजीनियर श्री अविनाश चन्द्र चतुर्वेदीद्ध के निधन पर उनकी उनके ज्येष्ठ पुत्रा मेजर जनरल नीलेन्द्र कुमार के निवास स्थान 38 केनिंग लेन, नई दिल्ली में 31 अक्टूबर 2006 को शान्ति पाठ का आयोजन किया गया।

एक सादगी, शालीनता तथा भावपूर्ण समारोह में परिवार जनों के अतिरिक्त बड़ी संख्या में सेना अधिकारी, असैनिक अफसर, पत्राकार तथा समाज के गणमान्य सदस्य उपस्थित थे। लगभग एक घंटे की अवधि के कार्यक्रम का संचालन एडवोकेट नेहा चतुर्वेदी ने किया।

समारोह का शुभारम्भ पं0 शिवदत्त चतुर्वेदी द्वारा गीता पाठ से हुआ। भगवत गीता के ज्ञानपूर्ण श्लोकों के उल्लेख से पंडित जी ने श्रीमती प्रमिला चतुर्वेदी के अध्ययनशील प्रवृत्ति की याद दिलाते हुए कहा कि विवाह से पहले उन्होंने 1945 में विशारद तथा साहित्य रत्न की परीक्षा में सफलता प्राप्त की थी। सूर सागर पर उन्होंने शोधकार्य किया था। सूर साहित्य की विशेषता – वात्सल्य के विभिन्न पहलुओं को उन्होंने अपने जीवन में कार्यान्वित किया। स्नेह, प्रेम तथा उदारता को समझा तथा सराहनीय रूप में अपनाया। विवाह के सतरह वर्ष बाद अंग्रेज़ी साहित्य का लाभ उठाने के लिए उन्होंने हाईस्कूल से एम0ए0 तक की परीक्षाएँ पास कीं।

प्रख्यात इतिहासज्ञ तथा साहित्य मर्मज्ञ प्रो0 शैल नाथ ने अपनी श्रद्धॉजलि में कहा कि प्रमिला जीजी अपने समाज के जाने माने संभ्रान्त परिवार की बड़ी बहू के रूप में आई थी। अपने व्यक्तित्व की गरिमा तथा स्नेहपूर्ण व्यवहार से उन्होंने शीघ्र ही सबका दिल जीत लिया। उनकी शाख्सियत का एक खास पहलू बड़े परिवार के सब सदस्यों के नीच सामंजस्य कायम रख पाना था। घर के कामकाज के बावजूद हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं का वह अपनी पैनी नजर से सदैव रसास्वदन करती रही।

अनुभवी शिक्षा शास्त्राी श्रीमती मीरा जी ने दिवगंत आत्मा प्रमिला जी के साथ अपने आत्मीय सम्बन्धों पर प्रकाश डालते हुए स्पष्ट किया कि वह उनकी बड़ी बहन ही नहीं वरन मॉ समान थीं। उनकी बेमिसाल सुन्दरता में सम्मोहनकारी जादू था।

अपने पिता स्व0 श्री कालिका प्रसाद जी तथा श्वसुर श्री निर्मल चन्द्र जी के सान्निध्य में उन्हें स्वतंत्राता संग्राम में भाग लेने वाले दो देश भक्तों से देश प्रेम, त्याग व सकारात्मक भूमिका को अपनाने का शिक्षण मिला। अपने पति के साथ रहते हुए उनसे मिलने आने वाले लखनऊ, सीतापुर, मथुरा, देहरादून आदि स्थानों पर उनकी खातिरदारी तथा मेहमान नवाजी के कायल थे।

अपनी जेठानी की याद में अपनी संक्षिप्त श्रद्धांजलि में श्रीमती उर्मिला ;धर्मपत्नी श्री गिरीश चन्द्रद्ध ने उनके साथ 53 से अधिक वर्षों की परस्पर निकटता की यादों को जीवन की एक विशेष निधि बताया। उनके मेरे साथ सम्बन्ध जिठानी व देवरानी के न होकर दो बहनों के समान थे।

सिविल लाइन के बंगलों की अफसरी शान शौकत में भी वह इतनी खुश थी, जितनी भरे पूरे परिवार की भीड़ में।

जाने माने संगीतज्ञों मालविका शर्मा तथा मीनाक्षी भटनागर के स्वरों में प्रस्तुत भजन समारोह की गरिमा के अनुरूप थे। इन दोनों गायकों के स्वरों की मधुरता तथा संवेदनशीलता सबके लिए हृदय स्पर्शी थी।

अनुभवी फोटोग्राफर तथा इंडिया टुडे के चीफ फोटो एडीटर श्री बनदीप सिंह ने प्रमिला जी के साहित्य प्रेम से प्रभावित अपनी यादों का वर्णन किया। मृत्यु के कुछ ही दिन पहले असाध्य रोग से ग्रसित जूझती हुई प्रमिला जी ने वनदीप जी द्वारा कविता की कुछ लाइनें सुनने के बाद तुरन्त अपनी पीड़ा को भूलकर अगली पंक्तियॉ सुना दी थीं। 'कटी पतंग' शीर्षक अपनी कविता तथा एक नज़्म के माध्यम से श्री वनदीप ने प्रमिला मौसी के साहित्यानुराग, विलक्षण याददाश्त तथा साहस की दाद दी। रामधारी सिंह दिनकर द्वारा वर्णित महाभारत युद्ध में कर्ण का अर्जुन के बाण के सामने दर्शित अनूठे साहस का आभास प्रमिला जी द्वारा केन्सर से मुकाबले में नज़र आता था। उनके चेहरे से कभी न हटने वाली मुस्कान तथा स्वाभाविक हॅसी से प्रभावित होकर वनदीप ने उन्हें रसगुल्ला मौसी का नाम दे डाला।

ऊंचे दरख्तों के साये में लगे सफेद शामियाने के नीचे फोटो फ्रेम से मुस्कराती प्रमिला चतुर्वेदी की छवि वाली वह शाम हम सब कभी न भूलेंगे।